दुगुणवड्ढीए एगेगजीववड्ढिदद्धाणं सरिसमिदि कधं णव्वदे ? गुरूवदेसादो । आइरियोवदेसो किण्ण चप्पलओ?[1] गंगाणईए पवाहो व्व अविच्छेदेण आइरियपरंपराए आगदस्स अप्पमाणत्तविरोहादो । पुणो पुव्विल्लभागहारादो दुगुणं भागहारं विरलिय दुगुणवड्ढिजीवेसु समखंडं कादूण दिण्णेसु रूवं पडि एगेगजीवपमाणं पावदि । पुणो एत्थ एगजीवं घेत्तूण असंखेज्जलोगमेत्तेसु जीवेहि[2] दुगुणवड्ढिजीवसमाणेसु[3] ट्ठाणेसु गदेसु तदो उवरिमट्ठाणे पक्खित्ते तदित्थजीवपमाणं होदि । णवरि पढमदुगुणवड्ढीए[4] एगजीववड्ढिदअद्धाणस्स अद्धं गंतूण बिदियदुगुणवड्ढीए एगो जीवो वड्ढदि । पुणो एत्तियं चेव अद्धाणं गतूण बिदियो जीवो वड्ढदि । एवमणेण विहाणेण णेयव्वं जाव विरलणमेत्तजीवा पइट्ठा त्ति । ताधे चउग्गुणवड्ढी होदि । बिदियदुगुणवड्ढिअद्धाणं पढमदुगुणवड्ढिअद्धाणेण सरिसं । कुदो ? पढम दुगुणवड्ढीए[5] एगजीववड्ढिदद्धाणस्स दुभागमवट्ठिदं सरिसं गंतूण बिदियदुगुणवड्ढीए एगेगजीववड्ढि-समुवलंभादो ।

पुणो चदुग्गुण-पढमदुगुणवड्ढिभागहारं विरलेदूण चदुग्गुणवड्ढिजीवेसु समखंडं कादूण दिण्णेसु रूवं पडि एगेगजीवपमाणं पावदि । पुणो चदुग्गुणवड्ढिजीवा आवलियाए

....

शंका – प्रथम दुगुणवृद्धिमें एक एक जीवकी वृद्धिको प्राप्त अध्वान सदृश है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान – वह गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

शंका – आचार्यका उपदेश मिथ्या क्यों नहीं हो सकता ?

समाधान – गंगानदीके प्रवाहके समान विच्छेदसे रहित होकर आचार्यपरम्परासे आये हुए उपदेशके अप्रमाण होनेका विरोध है ।

पश्चात् पूर्व भागहारसे दुगुणे भागहारका विरलनकर दुगुणवृद्धियुक्त जीवोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक जीवका प्रमाण प्राप्त होता है । पुन: यहाँ एक जीवको ग्रहण कर जीवोंसे अर्थात् जीवप्रमाणकी अपेक्षा दुगुणवृद्धि युक्त जीवोंके समान असंख्यातलोक मात्र स्थानोंके बीत जानेपर उससे आगेके स्थानमें उसे मिलानेपर वहाँके जीवोंका प्रमाण होता है । विशेष इतना है कि प्रथम दुगुणवृद्धिमें एक जीवकी वृद्धि युक्त अध्वानका अर्ध भाग जाकर द्वितीय दुगुणवृद्धिमें एक जीव बढता है । फिर इतनाही अध्वान जाकर द्वितीय जीव बढता है । इस प्रकार इस विधिसे विरलन राशि प्रमाण जीवोंके प्रविष्ठ होने तक ले जाना चाहिए । उस समय चतुर्गुणी वृद्धि होती है । द्वितीय दुगुणवृद्धिका अध्वान प्रथम दुगुणवृद्धिके अध्वानके सदृश है, क्योंकि, प्रथम एक जीवकी वृद्धि युक्त अध्वानका अर्ध भाग समानरूपसे अवस्थित जाकर द्वितीय दुगुणवृद्धिमें एक जीवकी वृद्धि पायी जाती है ।

पुन: प्रथम दुगुणवृद्धिके भागहारसे चौगुणे भागहारका विरलन करके चौगुणी वृद्धि युक्त जीवोंका समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक जीवका प्रमाण प्राप्त होता

....

(१) प्रतिषु 'चप्फलओ' इति पाठः । (२) ताप्रतौ 'मेत्तेसु जीवेसु जीवेहि' इति पाठः (३) अ–आप्रत्योः 'समासेसु', इति पाठः । (४) प्रतिषु 'पढमगुणहाणीए' इति पाठः । (५) ताप्रतौ 'पढंमगुणवड्ढौए' इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागमेत्ता । तदणंतरउवरिमविदिए अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । तदिए वि ट्ठाणे तत्तिया चेव । एवमसंखेज्जलोगमेत्तचदुग्गुणवड्ढिट्ठाणेसु गदेसु हेट्ठिमविरलणाए एगजीवं घेत्तूण तं तदित्थट्ठाणजीवेसु पक्खित्ते उवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि । णवरि पढमदुगुणवड्ढीए एगजीववड्ढिअद्धाणस्स चदुब्भागे एत्थ एगेगो जीवो वड्ढदि । पुणो बिदियचदुब्भागमेत्तद्धाणं जीवेहि अवट्ठिदं गंतूण बिदियो जीवो अधियो होदि । तदियचदुब्भागमेत्तद्धाणं जीवेहि अवट्ठिदं गंतूण तदियो जीवो अधियो होदि । पुणो चउत्थचदुब्भागमेत्तद्धाणं जीवेहि अवट्ठिदं गंतूण चउत्थो जीवो अधियो होदि । एवमवट्ठिदं चउत्थभागद्धाणं गंतूण एगेगजीवो वड्ढावेदव्वो जाव विरलणमेत्ता जीवा पविट्ठा त्ति । ताधे अट्ठगुणवड्ढिट्ठाणं होदि ।

पुणो पढमदुगुणवड्ढिभागहारअट्ठगुणं विरलिय अट्ठगुणवड्ढिजीवेसु समखंडं कादूण दिण्णेसु रूवं पडि एगेगजीवपमाणं पावदि । पुणो चउत्थदुगुणवड्ढीए जहण्णट्ठाणे जीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बिदिए ट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । एवं तत्तिया तत्तिया चेव जीवा होदूण गच्छंति जाव असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणे त्ति । तदो हेट्ठिमविरलणाए एगजीवं घेत्तूण तदित्थट्ठाणजीवेसु पक्खित्ते तदणंतरउवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि । णवरि पढमदुगुणवड्ढीए एगजीववड्ढिअद्धाणादो एदिस्से

....

है । पुन: चौगुणी वृद्धियुक्त जीव आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । तदनन्तर आगेके द्वितीय अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानमें जीव उतने ही हैं । तृतीय स्थानमें भी उतने ही जीव हैं । इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण चौगुणी वृद्धियुक्त स्थानोंके बीतनेपर अधस्तन विरलनके एक जीवको ग्रहण कर उसे वहाँके स्थानोंके जीवोंमें मिलानेपर आगेके स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । विशेष इतना है कि प्रथम दुगुण वृद्धिमें एक जीववृद्धि युक्त अध्वानके चतुर्थ भागमें यहाँ एक जीव बढता है । पुन: द्वितीय चतुर्थ भागप्रमाण अध्वान जीवोंसे अवस्थित जाकर द्वितीय जीव अधिक होता है । तृतीय चतुर्थ भाग प्रमाण अध्वान जीवोंसे अवस्थित जाकर तृतीय जीव अधिक होता है । फिर चतुर्थ चतुर्थ भाग प्रमाण अध्वान जीवोंसे अवस्थित जाकर चतुर्थ जीव अधिक होता है । इस प्रकार अवस्थित चतुर्थ भाग प्रमाण अध्वान जाकर एक एक जीवको बढाना चाहिये जब तक कि विरलन मात्र जीव प्रविष्ट होते हैं । तब अठगुणी वृद्धिका स्थान होता है ।

पश्चात् प्रथम दुगुणवृद्धिके भागहारसे अठगुने भागहारका विरलन कर अठगुणी वृद्धियुक्त जीवोंको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति एक एक जीवका प्रमाण प्राप्त होता है । पुन: चतुर्थ दुगुणवृद्धिके जघन्य स्थानमें जीव आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । द्वितीय स्थानमें जीव उतने ही हैं । इस प्रकार उतने उतने ही जीव होकर असंख्यात लोकप्रमाण स्थानों तक जाते हैं । तत्पश्चात् अधस्तन विरलनके एक जीवको ग्रहण कर उसे वहाँके स्थानके जीवोंमें मिलानेपर तदनन्तर आगेके स्थानके जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । विशेष इतना है कि एक जीवकी वृद्धियुक्त अध्वानसे इस दुगुणवृद्धिका एक जीवकी वृद्धियुक्त अध्वान आठवें भाग प्रमाण होता

दुगुणवड्ढीए एगजीववड्ढिअद्धाणमट्ठमभागो होदि । पुणो बिदिय[1] अट्ठमभागमेत्तद्धाणं गंतूण विदियो जीवो अधियो होदि । पुणो तदियअट्ठमभागमेत्तद्धाणं गंतूण तदियो जीवो अधियो होदि । चउत्थअट्ठमभागं गंतूण चउत्थो जीवो अधिओ होदि । पंचमअट्ठमभागं गंतूण पंचमो जीवो अधिओ होदि । छट्ठअट्ठमभागं गंतूण छट्ठो जीवो अहिओ होदि । सत्तमअट्ठमभागं गंतूण सत्तमो जीवो अहिओ होदि । अट्ठमअट्ठमभागं गंतूण अट्ठमो जीवो अधिओ होदि । अणेण भागेण[2] अट्ठमभागं धुवं कादूण विरलणमेत्तजीवेसु परिवाडीए पविट्ठेसु सोलसगुण-वड्ढिट्ठाणं होदि । एदं दुगुणवड्ढिअद्धाणं पढमदुगुणवड्ढिअद्धाणेण समाणं, तत्थ एगजीव-वड्ढिअद्धाणस्स अट्ठमभागे एदिस्से गुणहाणीए एगजीववड्ढिदंसणादो ।

पुणो पढमदुगुणवड्ढिअद्धाणं सोलसगुणं विरलेदूण सोलसगुणवड्ढिजीवेसु समखंडं कादूण दिण्णेसु एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगजीवपमाणं पावदि । तदो पंचमदुगुणवड्ढिपढमाणुभा-गबंधज्झवसाणट्ठाणजीवा[3] आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बिदिए ट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि त्ति । तदो हेट्ठिमविरलणाए एगजीवं घेत्तूण तदित्थट्ठाणजीवेसु पक्खित्ते तदणंतरउवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि । णवरि पढमदुगुणवड्ढीए एगजीववड्ढिअद्धाणस्स सोलसभागे एदिस्से गुणहाणीए एगो जीवो वड्ढदि त्ति घेत्तव्वं । पुणो बिदियं सोलसभागं गंतूण बिदियो जीवो अहियो होदि ।

....

है । पश्चात् द्वितीय अष्टम भाग प्रमाण अध्वान जाकर द्वितीय जीव अधिक होता है । पुन: तृतीय अष्टम भाग प्रमाण अध्वान जाकर तृतीय जीव अधिक होता है । चतुर्थ अष्टम भाग जाकर चतुर्थ जीव अधिक होता है । पंचम अष्टम भाग जाकर पाँचवाँ जीव अधिक होता है । छठा अष्टम भाग जाकर छठा जीव अधिक होता है । सातवाँ अष्टम भाग जाकर सातवाँ जीव अधिक होता है । आठवाँ अष्टम भाग जाकर आठवाँ जीव अधिक होता है । इस भागसे अष्टम भागको ध्रुव करके विरलन राशि प्रमाण जीवोंके परिपाटीसे प्रविष्ट होनेपर सोलसगुणी वृद्धिका स्थान होता है । यह दुगुणवृद्धिअध्वान प्रथम दुगुणवृद्धिअध्वानके समन है, क्योंकि, वहाँ एक जीववृद्धिअध्वानके आठवें भागमें इस गुणहानिमें एक जीवकी वृद्धि देखी जाती है ।

पुन: प्रथम दुगुणवृद्धिके अध्वानको सोलहगुणा विरलन कर सोलहगुणी वृद्धियुक्त जीवोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक जीवका प्रमाण प्राप्त होता है । पश्चात् पाँचवी दुगुणवृद्धिके प्रथम अनुभागबंधाध्यवसानस्थानके जीव आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । द्वितीय स्थानमें जीव उतने ही हैं । इस प्रकार असंख्यात लोकमात्र स्थानों तक ले जाना चाहिये । तत्पश्चात् अधस्तन विरलनके एक जीवको ग्रहण कर उसे वहाँके स्थानके जीवोंमें मिलाने-पर तदनंतर आगेके स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । विशेष इतना है कि प्रथम दुगुणवृद्धि संबंधी एक जीववृद्धिअध्वानके सोलहवें भागमें इस गुणहानिका एक जीव बढता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । फिर द्वितीय सोलहवाँ भाग जाकर द्वितीय जीव अधिक होता है । इस प्रकार

....

(१) प्रतिषु 'पुणो वि अट्ठ' इति पाठ: । (२) अ-आप्रत्यो: 'विहाणेण' इति पाठ: ।
(३) आप्रतौ 'ट्ठाणाणि जीवा', इति पाठ: ।

एवमेदं सोलसभागं धुवं कादूण एगेगजीवं[1] वड्ढाविय णेयव्वं जाव हेट्ठिमविरलणमेत्तजीवा पविट्ठा त्ति । ताधे बत्तीसगुणवड्ढी होदि । तदो एदं बीज[2] पदेणाणेणावहारिय उवरि णेयव्वं जाव दुरूवूणजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तदुगुणवड्ढीयो उवरि चडिदाओ त्ति ।

पुणो पढमदुगुणवड्ढिभागहारं जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स चदुब्भागेण गुणिय विरलेदूण एदाए दुगुणवड्ढीए समखंडं कादूण दिण्णाए एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगजीवपमाणं पावदि । तदो जवमज्झस्स हेट्ठिमदुगुणवड्ढिट्ठाणे जीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बिदिए अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । तदिए अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । एवं णेयव्वं जाव पढमदुगुणवड्ढीए एगजीवदुगुणवड्ढिदद्धाणं जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स चदुब्भागेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तद्धाणमेदिस्से गुणहाणीए गदं त्ति । ताधे हेट्ठिमविरलणाए एगरूवधरिदे जीवो पक्खिविदव्वो । पक्खिते उवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि। पुणो एदेणेव जीवपमाणेण अवट्ठिदाणि होदूण पुव्विल्लद्धाणमेत्ताणि चेव ट्ठाणाणि गच्छंति । तदो हेट्ठिमविरलणाए एगरूवधरिदेगजीवे तदित्थट्ठाणजीवेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेसु पक्खित्ते उवरिमतदणंतरट्ठाणजीवपमाणं होदि । एवमवट्ठिदमद्धाणं गंतूण एगेगजीवं वड्ढिय णेयव्वं जाव हेट्ठिमविरलणमेत्तसव्वे जीवा पविट्ठा त्ति । ताधे जवमज्झजीवपमाणं होदि । जहण्णट्ठाणजीवेसु जहण्णपरित्तासंखेज्ज-

....

इस सोलहवें भागको ध्रुव करके अधस्तन विरलन राशिप्रमाण जीवोंके प्रविष्ट होने तक एक एक जीवको बढाकर ले जाना चाहिये । तब बत्तीसगुणी वृद्धि होती है । पश्चात् इस बीजपदसे इसका निश्चय कर दो अंकोंसे कम जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेदों प्रमाण दुगुणवृद्धियाँ आगे जाने तक ले जाना चाहिये ।

पुनः प्रथम दुगुणवृद्धिके भागहारको जघन्य परीतासंख्यातके चतुर्थ भागसे गुणित करके विरलन कर इस दुगुणवृद्धिको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक जीवका प्रमाण प्राप्त होता है। तब यवमध्यके अधस्तन दुगुणवृद्धिस्थानमें जीव आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । द्वितीय अनुभागबंधाध्यवसानस्थानमें जीव उतने ही हैं । तृतीय अनुभागबंधाध्यवसानस्थानमें जीव उतने ही है । इस प्रकारसे प्रथम दुगुणवृद्धिमें एकजीवदुगुणवृद्धि युक्त अध्वानको जघन्य परीतासंख्यातके चतुर्थ भागसे खंडित कर उसमेंसे एक खंड प्रमाण अध्वान इस गणहानिका जाने तक ले जाना चाहिये । तब अधस्तन विरलन राशिके एक जीवका प्रक्षेप करना चाहिये । उसका प्रक्षेप करनेपर आगेके स्थानके जीवोंका प्रमाण होता हैं । पश्चात् इसी जीवप्रमाणसे अवस्थित होकर पूर्वोक्त अध्वान प्रमाण ही स्थान व्यतीत होते हैं । तब अधस्तन विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त एक जीवको वहाँके स्थानके आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंमें मिलानेपर आगेके तदनन्तर स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकारसे अवस्थित अध्वान जाकर एक एक जीवको बढाकर अधस्तन विरलनराशि प्रमाण सब जीवोंके प्रविष्ट होनेतक ले जाना चाहिये । तब यवमध्यके जीवोंका प्रमाण होता है । जघन्य स्थानके जीवोंको जघन्य परीतासंख्यातके अर्ध भागसे गुणित करनेपर

....

(१) अ-आप्रत्योः 'कादूण ण एगेग', इति पाठः । (२) अ-आप्रत्योः 'बीजादमर्णण' इति पाठः ।

यस्स दुभागेण गुणिदेसु जवमज्झजीवा होंति । जवमज्झादो हेट्ठिमदुगुणहाणीओ जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स रूवूणद्धछेदणयमेत्ताओ होंति त्ति वुत्तं होदि । जवमज्झादो हेट्ठिमदुगुणवड्ढीयो जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स रूवूणद्धछेदणयमेत्तीयो त्ति कधं णव्वदे? जुत्तीदो । का सा जुत्ती? उवरि भणिस्सामो ।

तेण परं विसेसहीणा ।। २८० ।।

तेण जवमज्झेण परमुवरि जीवा विसेसहीणा होदूण गच्छंत्ति । कुदो? साभावियादो तिव्वसंकिलेसेण जीवाणं पाएण संभवाभावादो वा ।

एवं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव उक्कस्सअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे त्ति ।। २८१ ।।

एवं विसेसहीणा विसेसहीणा त्ति [1]विच्छाणिद्देसो । तेण जवमज्झादो उवरि सव्वट्ठाणाणि अणंतरोवणिधाए जीवेहि विसेसहीणाणि त्ति दट्ठव्वं । एदस्स भावत्थो वुच्चदे। तं जहा-पढमदुगुणवड्ढिभागहारं जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स दुभागेण गुणिय विरलेदूण जवमज्झजीवेसु समखंडं कादूण दिण्णेसु एक्केक्करस्स रूवस्स एगेगजीवपमाणं पावदि ।

....

यवमध्यके जीव होते हैं । अभिप्राय यह है कि यवमध्यसे नीचेकी दुगुणहानियाँ जघन्य परीतासंख्यातके एक कम अर्धच्छेदोंके बराबर होती हैं ।

शंका – यवमध्यसे नीचेकी दुगुणवृद्धियाँ जघन्य परीतासंख्यातके एक कम अर्धच्छेदोंके बराबर हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान – वह युक्तिसे जाना जाता है ।

शंका – वह युक्ति कौनसी हैं ?

समाधान – उस युक्तिको आगे कहेंगे ।

इसके आगे जीव विशेष हीन हैं ।। २८० ।।

उससे अर्थात् यवमध्यसे आगे जीव विशेष हीन होकर जाते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है, अथवा तीव्र संक्लेशसे युक्त जीवोंकी प्राय: सम्भावना नहीं हैं ।

इस प्रकार उत्कष्ट अनुभागबंधाध्यवसानस्थान तक जीव विशेषहीन विशेषहीन होकर जाते हैं ।। २८१ ।।

इस प्रकार विशेषहीन विशेषहीन, यह वीप्सा निर्देश है । इसलिए यवमध्यसे आगे सब स्थान अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा जीवोंसे विशेष हीन हैं, ऐसा समझना चाहिए । इसका भावार्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है – प्रथम दुगुणवृद्धिके भागहारको जघन्य परीतासंख्यातके अर्धभागसे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसका विरलन करके यवमध्यके जीवोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक जीवका प्रमाण प्राप्त होता है । इसलिये इसको इसी प्रकारसे स्थापित

....

(१) अ-आप्रत्यो: 'मिछा' ताप्रतौ 'भि (इ) च्छा', इति पाठ: ।

एदो एदमेवं चेव ड्डविय परूवणा कीरदे । तं जहा–जवमज्झजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागा । विदियट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । एवं तत्तिया तत्तिया चेव होदूण ताव गच्छंति जाव पढमदुगुणवड्ढिअद्धाणम्मि एगजीवपविट्ठट्ठाणं[1] जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स चदुब्भागेण खंडिदएगखंडमेत्तद्धाणं गदं ति । ताधे हेट्ठिमविरलणाए एगरूवधरिदं घेत्तूण तदित्थट्ठाणजीवेसु अवणिदे तदुवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि ।

पुणो बिदियखंडमेत्ताणि ट्ठाणाणि जीवेहि सरिसाणि होदूण गच्छंति तदो हेट्ठिमविरलणाए विदियरूवधरिदएगजीवं घेत्तूण तदित्थट्ठाणजीवेसु अवणिदे तदणंतरउवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि । पुणो तेण ट्ठाणेण जीवेहि सरिसाणि तदियखंडमेत्ताणि ट्ठाणाणि गंतूण तदियो जीवो परिहायदि । एवमेगेगखंडमेत्तद्धाणं गंतूण एगेगजीवपरिहाणिं करिय णेयव्वं जाव हेट्ठिमविरलणाए अद्धमेत्तजीवा परिहीणा त्ति । तदित्थट्ठाणं[2] जीवा जवमज्झजीवेहिंतो दुगुणहीणा, हेट्ठिमविरलणमेत्तजीवेसु समुदिदेसु जवमज्झजीवुप्पत्तीदो । पुणो दुगुणहाणीए जीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बिदिय अणुभागट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । तदिए अणुभागट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । एवं तत्तिया तत्तिया चेव जीवा होदूण ताव गच्छंति जाव जवमज्झगुणहाणिम्हि एगजीवपरिहीणट्ठाणादो दुगुण-

....

करके प्ररूपणा करते है । वह इस प्रकार है –– यवमध्यके जीव आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । द्वितीयस्थानमें जीव उतने ही हैं । इस प्रकारसे उतने उतने ही होकर प्रथम दुगुणवृद्धिके अध्वानमेंसे एक जीव प्रविष्ट स्थान (अध्वान) को जघन्य परीतासंख्यातके चतुर्थ भागसे खण्डित करनेपर एक खण्ड प्रमाण अध्वानके बीतने तक जाते हैं । तब अधस्तन विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण करके उसे वहाँके स्थानके जीवोंमें से कम करनेपर उससे आगेके स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है ।

पश्चात् द्वितीय खंड प्रमाण स्थान जीवोंसे (जीवप्रमाण) सदृश होकर जाते हैं । फिर अधस्तन विरलनके द्वितीय अंकके प्रति प्राप्त एक जीवको ग्रहण कर उसे वहाँके स्थानसंबंधी जीवोंमेंसे कम करनेपर तदनंतर अग्रिम स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । पश्चात् जीवोंकी अपेक्षा उस स्थानके सदृश तृतीय खण्ड प्रमाण स्थानोंके बीतनेपर तृतीय जीवकी हानि होती है । इस प्रकारसे एक एक खण्ड प्रमाण अध्वान जाकर एक एक जीवकी हानिको करके अधस्तन विरलनके आधे मात्र जीवोंकी हानि होने तक ले जाना चाहिये । वहाँके स्थानोंसम्बन्धी जीव यवमध्यके जीवोंकी अपेक्षा दुगुणे हीन होते हैं, क्योंकि, अधस्तन विरलन प्रमाण जीवोंके समुदित होनेपर यवमध्य जीव उत्पन्न होते हैं । पुन: दुगुणहानिके जीव आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होते हैं । द्वितीय अनुभागस्थानमें जीव उतने ही होते हैं । तृतीय अनुभागस्थानमें जीव उतने ही होते हैं । इस प्रकार उतने उतने ही जीव होकर यवमध्य गुणहानिमेंसे एक जीवकी हानि युक्त स्थानसे दूना मात्र अध्वान बीतने तक जाते हैं । तब अधस्तन विरलन राशिके अर्ध भाग

....

(१) अ–आप्रतौ: 'पविट्ठाण', इति पाठ: ।

(२) अ–आ प्रतिषु 'तदित्थट्ठाणाणि' इति पाठ: । मुद्रितप्रतौ 'ट्ठाणाणं' इति पाठः ।

गदं ति । ताधे हेट्ठिमविरलणाए अद्धमेत्तरूवाणमेगरूवधरिदेगजीवं घेत्तूण तदित्थट्ठाणजीवेसु अवणिदे तदणंतरउवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि ।

किमट्ठं जवमज्झादो उवरिमगुणहाणीसु गुणहाणिं पडि दुगुण-दुगुणमद्धाणं गंतूण एगेगजीवपरिहाणी कीरदे ? जवमज्झहेट्ठिमगुणहाणीणं च उवरिमगुणहाणीणं पि सरिसत्तपदुप्पायणट्ठं । पुणो एत्तियं चेव अद्धाणं गंतूण बिदियजीवो परिहायदि । एवमेदमद्धाणं धुवं कादूण एगजीवपरिहाणिं करिय ताव णेयव्वं जाव हेट्ठिमविरलणाए चदुब्भागमेत्तजीवा परिहीणा त्ति । ताधे तदित्थट्ठाणजीवा जवमज्झजीवाणं चदुब्भागमेत्ता । ते च आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तदुवरिमट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । तदियट्ठाणे जीवा तत्तिया चेव । एवं सरिसा होदूण ताव गच्छंति जाव बिदियगुणहाणीए एगरूवपरिहाणिट्ठाणादो दुगुणमद्धाणं गदं ति । ताधे हेट्ठिमविरलणाए चदुब्भागमेत्तरूवाणमेगरूवधरिदेगजीवं घेत्तूण तदित्थट्ठाणजीवेसु अवणिदे[1] उवरिमट्ठाणजीवपमाणं होदि । तत्थ वि जीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तदो अवट्ठिदसरूवेण पुव्विल्लमद्धाणं गंतूण बिदियजीवो परिहायदि । एवमवट्ठिद-मद्धाणं गंतूण एगेगजीवपरिहाणि करिय ताव णेदव्वं जाव हेट्ठिमविरलणाए अट्ठमभा-

....

प्रमाण अंकोंमेंसे एक अंकके प्रति प्राप्त एक जीवको ग्रहण करके उसे वहाँके स्थानसम्बन्धी जीवोंमेंसे कम कर देनेपर तदनन्तर आगेके स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है ।

शंका – यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानियोंमेंसे प्रत्येक गुणहानिमें दूना दूना अध्वान जाकर एक एक जीवकी हानि किसलिये की जाती है ?

समाधान – यवमध्यसे नीचेकी गुणहानियों और ऊपरकी गुणहानियोंकी भी सदृशता बतलानेके लिये एक एक जीवकी हानि की जाती है ।

फिर इतना ही अध्वान जाकर द्वितीय जीवकी हानि होती है । इस प्रकारसे इस अध्वानको ध्रुव करके एक जीवकी हानि कर अधस्तन विरलन राशिके चतुर्थ भाग प्रमाण जीवोंकी हानि होने तक ले जाना चाहिये । उस समय वहाँके स्थान सम्बन्धी जीव यवमध्य जीवोंके चतुर्थ भाग प्रमाण होते हैं और वे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होते हैं । उससे ऊपरके स्थानमें जीव उतने ही होते हैं । तृतीय स्थानमें जीव उतने ही होते हैं । इस प्रकार सदृश होकर वे तब तक जाते है जब तक कि द्वितीय गुणहानिके एक अंककी हानियुक्त स्थानसे दूना अध्वान नहीं बीत जाता । तब अधस्तन विरलनके चतुर्थ भाग प्रमाण अंकोंमेंसे एक अंकके प्रति प्राप्त एक जीवको ग्रहण कर उसे वहाँके स्थान संबंधी जीवोंमेंसे कम करनेपर अग्रिम स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । वहाँ भी जीव आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होते हैं ।

पश्चात् अवस्थित स्वरूपसे पूर्वोक्त अध्वान जाकर दूसरे जीवकी हानि होती है । इस प्रकारसे अवस्थित अध्वान जाकर एक एक जीवकी हानि करके अधस्तन विरलनके आठवें भाग

....

(१) मप्रतौ 'अवणिदेसु', इति पाठः ।

गमेत्तजीवा परिहीणा त्ति । ताधे तदित्थट्ठाणजीवाणं पमाणं जवमज्झस्स अट्ठमभागो । ते च आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एवं णेयव्वं जाव जहण्णाणुभागबंधट्ठाणजीवेहिंतो दुगुणमेत्ता जीवा जादा त्ति । णवरि जवमज्झगुणहाणीए एगरूवपरिहीणध्दाणादो[१] बिदियगुणहाणीए एगरूवपरिहीणध्दाणं दुगुणं[२] होदि । तदियगुणहाणीए एगरूवपरिहीणध्दाणं चदुग्गुणं होदि । चउत्थगुणहाणीए एगरूवपरिहीणध्दाण [३]मट्ठगुणं होदि । पंचमगुणहाणीए एगजीवपरिहीणध्दाणं सोलसगुणं होदि । एवं दुगुण-दुगुणकमेण सव्वत्थ णेयव्वं ।

पुणो अप्पिदगुणहाणीए वि समयाविरोहेण रूवाणं परिहाणीए कदाए जहण्णट्ठाणजी-वेहि सरिसा होंति । पुणो पढमदुगुणवड्ढीए एगरूवपरिहीणद्धाणादो दुगुणमध्दाणं गंतूण एगजीवपरिहीणध्दाणं दुगुणं होदि । पुणो एत्तियमेत्तमवट्ठिदं गंतूण एगजीवपरिहाणिं कादूण ताव णेयव्वं जाव जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो अध्दमेत्ता जादा त्ति । पुणो पढमदुगुणवड्ढीए एगजीवपरिहीणद्धाणादो[३] चदुग्गुणं गंतूण एगेगजीवपरिहाणिं कादूण ताव णेयव्वं जाव जहण्णट्ठाणजीवाणं चदुब्भागो ट्ठिदो त्ति । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव उक्कस्सट्ठाणजीवा त्ति । णवरि हेट्ठिम-हेट्ठिमगुणहाणीसु एगेगरूवपरिहीणद्धाणादो[४] अणंतर-

....

प्रमाण जीवोंकी हानी होने तक ले जाना चाहिये । तब वहाँके स्थान सम्बन्धी जीवोंका प्रमाण यवमध्यके आठवें भाग होता है । वे भी आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होते हैं । इस प्रकार जघन्य अनुभागबन्धस्थान सम्बन्धी जीवोंकी अपेक्षा दूनेमात्र जीवोंके होने तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि यवमध्यगुणहानि सम्बन्धी एक अंककी हानियुक्त अध्वानकी अपेक्षा द्वितीय गुणहानि सम्बन्धी एक अंककी हानियुक्त अध्वान दुगुना है । तृतीय गुणहानि सम्बन्धी एक अंककी हानियुक्त अध्वान चौगुना है । चतुर्थ गुणहानि सम्बन्धी एक अंककी हानियुक्त अध्वान अठगुना है । पंचम गुणहानि सम्बन्धी एक अंककी हानियुक्त अध्वान सोलहगुना है । इस प्रकार सर्वत्र दूने दूने क्रमसे ले जाना चाहिये ।

पश्चात् विवक्षित गुणहानिमें भी समयानुसार अंकोंकी हानिके करनेपर जघन्य स्थानके जीवोंके सदृश होते हैं । फिर प्रथम दुगुणवृद्धिमें एक अंककी हानियुक्त अध्वानसे दूना अध्वान जाकर एक जीवकी हानियुक्त अध्वान दूना होता है । फिर इतना मात्र अध्वान अवस्थित जाकर एक जीवकी हानि करके उनके जघन्य स्थान संबंधी जीवोंकी अपेक्षा अर्ध भाग प्रमाण होने तक ले जाना चाहिये । तपश्चात् प्रथम दुगुणवृद्धिमें एक जीवकी हानियुक्त अध्वानसे चौगुणा अध्वान जाकर एक एक जीवकी हानि करके तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि जघन्य स्थान सम्बन्धी जीवोंका चतुर्थ भाग रहता है । इस प्रकार जानकर उत्कृष्ट स्थानके जीवोंके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि अधस्तन अधस्तन गुणहानियोंमें एक एक अंककी हानियुक्त अध्वानसे अनन्तर

....

(१) अ-आप्रत्योः 'पडिहीणद्धाणादो', इति पाठः । (२) मप्रतौ 'चदुगुणं' इति पाठः ।
(३) अ-ताप्रत्योः 'हीणट्ठाणं-' इति पाठः । (४) प्रतिषु 'हीणट्ठाणादो' इति पाठः ।

उवरिमगुणहाणीसु एगेगजीवपरिहीणद्धाणं[1] दुगुणं दुगुणं होदि । एवमद्धद्धेण जीवेसु गच्छमाणेसु उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा संखेज्जा किण्ण होंति त्ति भणिदे--ण, जहण्णट्ठाणप्पहुडि जावुक्कस्सट्ठाणे त्ति जीवा सव्वट्ठाणेसु उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति त्ति सुत्तसिद्धत्तादो । जवमज्झादो हेट्ठिमगुणहाणीओ संखेज्जाओ, उवरिमाओ हेट्ठिमगुणहाणिसलागाहिंतो असंखेज्जगुणाओ होदूण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति त्ति । एदस्स जुत्ती वुच्चदे । तं जहा-जाव जहण्णट्ठाणजीवपमाणं चेट्ठदि[2] ताव जवमज्झजीवाणमद्धछेदणए कदे तत्थुप्पण्णस-लागाओ जवमज्झादो हेट्ठिमगुणहाणिसलागपमाणं होदि । पुणो जाव उक्कस्सट्ठाणजीव-पमाणं पावदि ताव जवमज्झजीवाणमद्धछेदणए कदे तत्थुप्पण्णछेदणयमेत्तं जवमज्झादो[3] उवरिमगुणहाणिसलागपमाणं जेण होदि तेण ताव जवमज्झजीवपमाणाणुगमं कस्सामो-- जहण्णपरित्तासंखेज्जयं विरलेदूण एक्केक्कस्स रूवस्स [4]जहण्णपरित्ता-संखेज्जयं दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे आवलिया उप्पज्जदि । ण च आवलि-यमेत्ता जवमज्झजीवा होंति, सव्वट्ठाणेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव जीवा होंति त्ति सुत्तवयणेण सह विरोहादो । तेण जहण्णपरित्तासंखेज्जेण

....

ऊपरकी गुणहानियोंमें एक एक जीवकी हानि युक्त अध्वान दूना दूना होता है ।

शंका – इस प्रकार अर्ध अर्ध भाग स्वरूपसे जीवोंके जाने पर उत्कृष्ट स्थानमें जीव संख्यात क्यों नहीं होते हैं ?

समाधान – ऐसी आशंका करने पर उत्तरमें कहते हैं कि वे वहाँ संख्यात नहीं होते हैं, क्योंकि, जघन्य स्थानसे लेकर उत्कृष्ट स्थान तक सब स्थानोंमें जीव उत्कृष्ट आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण ही होते हैं, ऐसा सूत्रसे सिद्ध है ।

यवमध्यसे नीचेकी गुणहानियाँ संख्यात हैं । ऊपरकी गुणहानियाँ अधस्तन गुणहानिशला-काओंसे असंख्यातगुणी होकर आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र होती हैं । इसकी युक्ति कहते हैं । वह इस प्रकार है – जब तक जघन्य स्थानके जीवोंका प्रमाण रहता है तब तक यवमध्य जीवोंके अर्धच्छेद करनेपर वहाँ उत्पन्न हुईं शलाकायें यवमध्यसे नीचेकी गुणहानिशलाकाओंके बराबर होती हैं । पश्चात् जब तक उत्कृष्ट स्थानके जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है तब तक यवमध्य-जीवोंके अर्धच्छेद करनेपर उनमें उत्पन्न अर्धच्छेदोंके बराबर चूँकि यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानिश-लाकाओंका प्रमाण होता है, अतएव पहले यवमध्य जीवोंका प्रमाणानुगम करते हैं – जघन्य परीता-संख्यातका विरलन करके एक एक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यातको देकर परस्पर गुणित करनेपर आवली उत्पन्न होती है । परन्तु आवली प्रमाण यवमध्य जीव हैं नहीं, क्योंकि, ऐसा मानने पर 'सब स्थानोंमें आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण ही जीव होते हैं' इस सूत्रवचनके साथ विरोध होता है । इसलिये जघन्य परीतासंख्यातका आवलीमें भाग देनेपर जो भाग लब्ध हो

....

(१) आप्रतौ 'हीणद्धाणं', इति पाठः । (२) अप्रतौ 'चिट्ठदि' इति पाठः । (३) आप्रतौ – 'छेदणयजवमज्झादो' इति पाठः । (४) ताप्रतौ 'विरलेदूण एक्केक्कस्स रूवस्स' (जहण्णपरित्तासंखेज्जयं विरलेदूण) जहण्ण' इति पाठः ।

आवलियाए भागे हिदाए जं भागलद्धं तमुक्कस्सजवमज्झजीवपमाणं होदि, एत्तो अहियस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स अणुवलंभादो । उक्कस्ससंखेज्जं विरलेदूण एक्केक्कस्स रूवस्स जहण्णपरित्तासंखेज्जयं दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे जवमज्झजीवा होंति त्ति वुत्तं होदि । पुणो एदस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स जत्तिया अद्धछेदणयसलागा तत्तियमेत्ता जवमज्झस्स अद्धछेदणया त्ति घेत्तव्वं । होंता वि जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धछेदणएहि गुणिदुक्कस्ससंखेज्जमेत्ता । एवमुक्कस्सेण जवमज्झपरूवणं कदं ।

संपहि जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धछेदणयमेत्ताओ जवमज्झादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ होंति त्ति ण वोत्तुं सक्किज्जदे, जवमज्झादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाहिंतो उवरिमणाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तं फिट्टिदूण संखेज्जगुणत्तप्पसंगादो । तं जहा–उक्कस्सट्ठाणजीवा सुट्ठु थोवा होंति तो जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्ता चेव होंति, एदम्हादो ऊणआवलियाए[1] असंखेज्जदिभागे घेप्पमाणे उक्कस्सट्ठाणजीवाणं संखेज्जत्तप्पसंगादो । ण च एवं, सव्वेसु ट्ठाणेसु असंखेज्जजीवब्भुवगमादो । तेण उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ रूवूणुक्कस्ससंखेज्जेण गुणिदजहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धछेदणयमेत्ताओ होंति । एवं संते हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाहि उवरिमणाणागुणहाणिसलागासु ओवट्टिदासु संखेज्जाणि रूवाणि आगच्छंति त्ति हेट्ठिमणाणागुणहाणिसला-

....

यह उत्कृष्ट यवमध्य जीवोंका प्रमाण होता है, क्योंकि इससे अधिक आवलीका असंख्यातवाँ भाग पाया नहीं जाता । उत्कृष्ट संख्यातका विरलन करके एक एक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यातको देकर परस्पर गुणित करनेपर जो प्रमाण प्राप्त हो उतने यवमध्य जीव होते हैं, यह उसका अभिप्राय है । पुन: इस आवलीके असंख्यातवें भागकी जितनी अर्धच्छेदशलाकायें हों उतने मात्र यवमध्यके अर्धच्छेद होते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । उतने होकर भी वे जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंसे गुणित उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्टसे यवमध्यकी प्ररूपणा की गई है ।

अब जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर यवमध्यसे नीचेकी नानागुणहानिशलाकायें होती हैं, ऐसा कहना शक्य नहीं है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर यवमध्यसे नीचेकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अपेक्षा जो ऊपरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं, उनका वह असंख्यातगुणत्व नष्ट होकर संख्यातगुणत्वका प्रसंग आता हैं । यथा-- उत्कृष्ट स्थानके जीव यदि बहुत ही स्तोक हों तो वे जघन्य परीतासंख्यातके बराबर ही होते हैं, क्योंकि, इससे कम आवलीके असंख्यातवें भागको ग्रहण, करनेपर उत्कृष्ट स्थान संबंधी जीवोंके संख्यात होनेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, सब स्थानोंमें असंख्यात जीव स्वीकार किये गये हैं । इस कारण ऊपरकी नानागुणहानिशलाकायें एक कम उत्कृष्ट संख्यातसे गुणित जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर होते हैं । ऐसा होनेपर चूँकि अधस्तन नानागुणहानिश-लाकाओंसे उपरिम नानागुणहानिशलाकाओंको अपवर्तित करनेपर असंख्यात अंक आते हैं, अतएव

....

(१) अ-आप्रत्यो: 'एदम्हादो ओ आवलियाए' इति पाठः ।

गाहिंतो उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ संखेज्जगुणाओ होंति । ण च एवं, जवमज्झहेट्ठिमगुणहाणिसलागाहिंतो उवरिमसव्वगुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणओ त्ति उवरि जवमज्झपरूवणाए भण्णमाणत्तादो । तदो जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धछेदयमेत्ताओ जवमज्झहेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ ण होंति त्ति परिच्छिज्जदे । तम्हा रूवूणजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्ताओ हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ त्ति घेत्तव्वं, एवं गहिदे[1] हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाहिंतो उवरिमगुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तुववत्तीदो।

संपहि रूवूणजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तासु हेट्ठिमगुणहाणिसलागासु संतासु जहा उवरिमगुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तं होदि तहा परूवणं कस्सामो । तं जहा - उक्कस्ससंखेज्जं विरलिय रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणएसु दिण्णेसु जो एदेसिं सव्वेसिं समासो सो जवमज्झजीवद्धछेदणयपमाणं । पुणो एत्थ एगेगरूवधरिदम्हि एगेगरूवे गहिदे उक्कस्ससंखेज्जमेतरूवाणि होंति । पुणो ताणि पडिरासिय एगरूवधरिदेण रूवूणजहण्णपरित्तासंखेज्जद्धच्छेदणयमेत्तेण पडिरासिदउक्कस्ससंखेज्जमोवट्टिय लद्धं[2] पुव्विल्लभागहारादो संखेज्जगुणहीणं उक्कस्ससंखेज्जमेत्तपुव्विल्लविरलणाए पासे विरलिय पडिरासिदउक्कस्ससंखेज्जं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स रूवूणद्धछेदणयपमाणं

....

अधस्तन नानागुणहानिशलाकाओंसे उपरिम नानागुणहानिशलाकायें संख्यातगुणी होनी चाहिये । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, यवमध्यकी अधस्तन गुणहानिशलाकाओंकी अपेक्षा उपरिम सब गुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं, ऐसा आगे यवमध्यप्ररूपणामें कहा जानेवाला है । इसलिये यवमध्यकी अधस्तन गुणहानिशलाकायें जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर नहीं होती हैं, यह जाना जाता है । इस कारण एक कम जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर अधस्तन गुणहानिशलाकायें होती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा ग्रहण करनेपर अधस्तन नानागुणहानिशलाकाओंकी अपेक्षा उपरिम गुणहानिशलाकाओंका असंख्यातगुणत्व बन जाता है ।

अब एक कम जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर अधस्तन गुणहानिशलाकाओंके होनेपर जिस प्रकार उपरिम गुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी होती हैं वैसी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है - उत्कृष्ट संख्यातका विरलन करके प्रत्येक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंको देनेपर जो इन सबका जोड हो वह यवमध्य जीवोंके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । फिर यहाँ एक एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमेंसे एक एक अंकको ग्रहण करनेपर उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक होते हैं । फिर उनको प्रतिराशि करके एक कम जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर एक अंकके प्रति प्राप्त राशिसे प्रतिराशि रूप उत्कृष्ट संख्यातको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो वह पूर्व भागहारकी अपेक्षा संख्यातगुणा हीन होता है । इसको उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण पूर्व विरलन राशिके पासमें विरलित करके प्रतिराशिभूत उत्कृष्ट संख्यातको समखण्ड करके प्रत्येक

....

(१) ताप्रतौ 'गहिदेहि हेट्ठिम' इति पाठः। (२) प्रतिषु 'अद्धं' इति पाठः ।

पावदि, गहिदगहणादो । तत्थ एगरूवधरिदमेत्ताओ जवमज्झादो हेट्ठिमगुणहाणिसलागाओ त्ति घेत्तव्वं । एदासिं सलागाणं विरलिय विगुणिदाणं अण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धमेत्तं होदि । एदेण जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धेण गुणगारगुणिज्जमाणसरूवेण अवट्ठिदेसु उवरिमविरलणमेत्तेसु जवमज्झजीवेसु ओवट्टिदेसु गुणगार-भागहारे सरिसे अवणिय रूवूणुवरिमविरलणमेत्तेसु रूवूण जहण्णपरित्तासंखे-ज्जयस्स अद्धेसु अण्णोण्णब्भत्थेसु संतेसु जहण्णट्ठाणजीवपमाणं होदि । जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गचदुब्भागमेत्ता उक्कस्सट्ठाणजीवा जदि होंति तो जहण्णपरित्ता-संखेज्जयस्स अद्धछेदणयसलागाओ रूवूणाओ दुरूवूणुवरिमविरलणाए गुणिदाओ जवमज्झादो उवरिमगुणहाणिसलागपमाणं होदि । उवरिमविरलणा च असंखेज्जा, जहण्णपरित्तासंखे-ज्जयस्स रूवूणअद्धछेदणएहि उक्कस्ससंखेज्जे भागे हिदे तत्थ एगभागेण अब्भहिय-उक्कस्ससंखेज्जपमाणत्तादो । तेण हेट्ठिमगुणहाणिसलागाहिंतो उवरिमगुणहाणि-सलागाओ असंखेज्जगुणा त्ति सिद्धं । ण च जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स रूवूणद्धछेद-णयमेत्ताओ चेव जवमज्झादो हेट्ठिमगुणहाणिसलागाओ होंति त्ति णियमो अत्थि । किं तु एत्तियमेत्तासु हेट्ठिमगुणहाणिसलागासु गहिदासु सुत्तविरोहो[1] णत्थि त्ति

....

अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यातके एक कम अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है, यहाँ गृहीतका ग्रहण है। उनमें एक एक अंकके प्रति प्राप्त राशिप्रमाण यवमध्यसे नीचेकी गुणहानि शलाकायें होती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । इन शलाकाओंका विरलन करके दूना कर परस्पर गुणित करनेपर जो प्रमाण प्राप्त होता है वह जघन्य परीतासंख्यातके अर्ध भाग मात्र होता है । इस जघन्य परीतासंख्यातके अर्ध भागके द्वारा गुणकार गुण्य स्वरूपसे अवस्थित उपरिम विरलन प्रमाण यवमध्य जीवोंको अपवर्तित करनेपर समान गुणकारों और भागहारोंका अपनयन कर एक कम उपरिम विरलन प्रमाण जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंको परस्पर गुणित करनेपर जघन्य स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । जघन्य परीतासंख्यातके वर्गके चतुर्थ भागप्रमाण यदि उत्कृष्ट स्थानके जीव होते हैं तो जघन्य परीतासंख्यातकी एक कम अर्धच्छेदशलाकायें दो अंकोंसे हीन ऊपरकी विरलन राशिसे गुणित होकर यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानिशलाकाओंका प्रमाण होता है । उपरिम विरलन राशि भी असंख्यात हैं, क्योंकि, वे जघन्य परीतासंख्यातके एक कम अर्धच्छेदोंका उत्कृष्ट संख्यातमें भाग देनेपर उसमें एक भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण होती हैं । इसीलिये अधस्तन गुणहानिशलाकाओंकी अपेक्षा उपरिम गुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं, यह सिद्ध होता है ।

यवमध्यसे नीचेकी गुणहानिशलाकायें जघन्य परीतासंख्यातके एक कम अर्धच्छेदोंके बराबर ही होती हैं, ऐसा नियम भी नहीं है । किंतु अधस्तन गुणहानिशलाकाओंको इतनी मात्र ग्रहण करनेपर सूत्रविरोध नहीं है, ऐसी प्ररूपणा की गई है । जघन्य परीतासंख्यातके एक कम

....

(१) अ-आप्रत्योः 'सुत्तविरोहा' इति पाठः ।

परूविदं । जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स रूवूणद्धछेदणयप्पहुडि दुरूवूण-तिरूवूणादिकमेण ओवट्टिदाविय जवमज्झहेट्ठिमगुणहाणिसलागाणं पमाणे परूविदे वि ण सुत्तविरोहो होदि त्ति वुत्तं होदि । हेट्ठिमगुणहाणिसलागाओ एत्तियाओ चेव होंति त्ति किण्ण वुच्चदे ? ण, तहाविहसुत्तुवएसाभावादो[1] । ण च उक्कस्सट्ठाणजीवा जहण्णपरित्तासंखेज्जवरिमवग्गस्स चदुब्भागमेत्ता चेव होंति त्ति णियमो अत्थि, ति-चित्तारिपंचादिजहण्णपरित्तासंखेज्जद्धाणमण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तेसु उक्कस्सट्ठाणजीवेसु गहिदेसु वि सुत्तविरोहाभावादो। एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

परंपरोवणिधाए अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणजीवेहिंतो तत्तो असंखेज्जलोगं गंतूण दुगुणवड्ढिदा ।। २८२ ।।

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणेसु जीवा जहण्णाणुभागबंधज्झवसाणजीवेहि सरिसा होदूण पुणो तेसिमेगजीवेण अहियत्तुवलंभादो । चदुसमइयट्ठाणप्पहुडि जाव बिसमइयाणमसंखेज्जदिभागो त्ति ताव सव्वट्ठाणाणि जीवेहिं सरिसाणि त्ति भणिदं होदि । अवट्ठिदमेत्तियमद्धाणं गंतूण एगेगजीववड्ढीए जहण्णट्ठाणजीवमेत्तेसु जीवेसु जहण्णट्ठाणजीवाणमुवरि वड्ढिदेसु दुगुणवड्ढिसमुप्पत्तीदो गुणहाणिअद्धाणमसंखेज्जलोगमेत्तं होदि त्ति घेत्तव्वं ।

....

अर्धच्छेदोंसे लेकर दो अंक कम, तीन अंक कम इत्यादि क्रमसे अपवर्तित कराकर यवमध्यकी अधस्तन गुणहानिशलाकाओंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेपर भी सूत्र विरोध नहीं होता है, यह उसका अभिप्राय है ।

शंका – अधस्तन गुणहानिशलाकायें इतनी ही होती हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, वैसा स्पष्ट उपदेश नहीं है ।

उत्कृष्ट स्थानके जीव जघन्य परीतासंख्यातके उपरिम वर्गके चतुर्थ भागप्रमाण ही होते हैं, ऐसा नियम भी नहीं हैं, क्योंकि, तीन, चार, पाँच आदि जघन्य परीतासंख्यातके अर्ध भागोंको परस्पर गुणित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र उत्कृष्ट स्थानके जीवोंको ग्रहण करनेपर भी सूत्र विरोध नहीं होता है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधामें जघन्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानके जो जीव हैं उनसे असंख्यात लोकमात्र जाकर वे दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं । २८२ ।

कारण यह है कि असंख्यात लोकमात्र अणुभागबन्धाध्यवसानस्थान जीव जघन्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानके जीवोंसे समान होकर फिर वे एक जीवसे अधिक पाये जाते हैं । चार समय योग्य स्थानोंसे लेकर दो समय योग्य स्थानोंके असंख्यातवें भाग तक सब स्थान जीवोंकी अपेक्षा समान है, यह अभिप्राय है । इतना मात्र अवस्थित अध्वान जाकर एक एक जीवकी वृद्धि द्वारा जघन्य स्थानसम्बन्धी जीवोंके ऊपर जघन्य स्थान सम्बन्धी जीवोंके बराबर जीवोंके बढ जानेपर दूनी वृद्धिके उत्पन्न होनेके कारण गुणहानिअध्वान असंख्यात लोकमात्र होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

....

(१) प्रतिषु 'सुट्ठुवएसाभावादो' इति पाठः ।

एवं दुगुणवड्डिदा जाव जवमज्झं ।। २८३ ।।

सुगममेदं, अणंतरोवणिधाए परूविदविसेसत्तादो । जवमज्झादो हेट्ठिमदुगुणवड्डिअद्धाणाणि सरिसाणि, पढमदुगुणवड्डिप्पहुडि उवरिमदुगुणवड्ढीसु दुगुणवड्डिं पडि हेट्ठिमदुगुणवड्ढीए एगजीववड्डिदअद्धाणस्स अद्धद्धं गंतूण एगेगजीववड्ढीए उवलंभादो । जवमज्झादो उवरिमदुगुणहाणीयो वि हेट्ठिमदुगुणहाणीहि अद्धाणेण समाणाओ, दुगुणदुगुणमद्धाणं गंतूण एगेगजीवपरिहाणीदो ।

तेण परमसंखेज्जलोगं गंतूण दुगुणहीणा ।। २८४ ।।

सुगमं ।

एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव उक्कासियअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे त्ति ।। २८५ ।।

एदं पि सुगमं ।

एकजीवअणुभागबंधज्झवसाणदुगुणवड्डि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जा लोगा ।। २८६ ।।

गुणहाणिअद्धाणं पुव्वं परूविदं, पुणरिह किमट्ठं परूविज्जदे ? गुणहाणिअद्धाणादो णाणागुणहाणिसलागासु आणिज्जमाणासु मंदमेहाविसिस्सजणसंभालणट्ठं परूविज्जदे ।

....

इस प्रकार यवमध्य तक वे दूनी दूनी वृद्धिसे युक्त हैं ।। २८३ ।।

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसकी विशेषता की प्ररूपणा अनन्तरोपनिधामें की जा चुकी है । यवमध्यसे नीचेके दुगुणवृद्धिअध्वान सदृश है, क्योंकि, प्रथम दुगुणवृद्धिसे लेकर आगेकी दुगुणवृद्धियोंमेंसे प्रत्येक दुगुणवृद्धिमें अधस्तन दुगुणवृद्धिके एक जीव वृद्धियुक्त अध्वानका आधा आधा भाग जाकर एक एक जीवकी वृद्धि पायी जाती है । यवमध्यसे ऊपरकी दुगुणहानियाँ भी अधस्तन दुगुणहानिसे अध्वानकी अपेक्षा समान हैं, क्योंकि, दूना दूना अध्वान जाकर एक एक जीवकी हानि होती है ।

उससे आगे असंख्यात लोक जाकर वे दूने हीन होते हैं ।। २८४ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकारसे वे उत्कृष्ट अनुभागबंधाध्यवसानस्थानके प्राप्त होने तक दूने दूने हीन हैं ।। २८५ ।।

यह सूत्र भी सुगम है ।

एक जीवके अनुभागबंधाध्यवसानस्थानोंसम्बन्धी दुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर असंख्यात लोकप्रमाण हैं ।। २८६ ।।

शंका – गुणहानिअध्वानकी प्ररूपणा पहले की जा चुकी है, उसकी प्ररूपणा यहाँ फिरसे किसलिए की जा रही है ?

समाधान – गुणहानिअध्वानसे नानागुणहानिशलाकाओंको लाते समय मन्दबुद्धि शिष्योंको

णाणाजीवअणुभागबंधज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणि-ट्ठाणंतराणि आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।। २८७ ।।

एदस्स साहणं वुच्चदे । तं जहा-एगगुणहाणिअद्धाणमेत्तअसंखेज्जलोगअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणं जदि एगा दुगुणवड्ढिसलागा लब्भदि तो सव्वाणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-णाणादुगुणवड्ढि-हाणि[1] सलागाओ लब्भंति ।

णाणाजीवअणुभागबंधज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ।। २८८ ।।

कुदो ? आवलियाए असंखेज्जभागपमाणत्तादो ।

एयजीवअणुभागबंधज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।। २८९ ।।

कुदो ? असंखेज्जलोगपमाणत्तादो । एदमप्पाबहुगं पमाणपरूवणादो चेव अवगदमिदि णेव परूवेदव्वं ? ण, मंदमेहाविसिस्साणुग्गहट्ठं परूवणाए कीरमाणाए दोसाभा-

....

स्मरण करानेके लिये उसकी फिरसे प्ररूपणा की जा रही है ।

नाना जीवों सम्बन्धी अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानों सम्बन्धी दुगुणवृद्धि-हानि-स्थानान्तर आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।। २८७ ।।

इसका साधन कहते हैं । वह इस प्रकार है - एक गुणहानिअध्वानके बराबर असंख्यात लोक-प्रमाण अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानोंकी यदि एक दुगुणवृद्धिशलाका पायी जाती है तो समस्त अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानोंकी कितनी दुगुणवृद्धिशलाकायें पायी जावेंगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण नानादुगुणवृद्धि-हानि शलाकायें पायी जाती हैं ।

नाना जीवों सम्बन्धी अनुभागबन्धाध्यवसानदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर स्तोक हैं ।। २८८ ।।

कारण कि वे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

उनसे एक जीव सम्बन्धी अनुभागबन्धाध्यवसानदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ।। २८९ ।।

कारण कि असंख्यात लोक प्रमाण हैं ।

शंका - यह अल्पबहुत्व चूँकि प्रमाणप्ररूपणासे ही जाना जा चुका है, अतएव उसकी यहाँ प्ररूपणा नहीं करनी चाहिये ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहार्थ उसकी यहाँ प्ररूपणा करनेमें काई दोष नहीं है ।

....

(१) ताप्रतौ 'णाणागुणवड्ढिहाणिं' इति पाठः ।

वादो । संपहि जवमज्झुप्पण्णपदेसपरूवणट्ठं जवमज्झपरूवणा कीरदे--

जवमज्झपरूवणाए ट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे जवमज्झं ।।२९०।।

सव्वट्ठाणाणि असंखेज्जखंडाणि कादूण तत्थ एगखंडे जवमज्झं होदि । एवं जवमज्झं हेट्ठिम-चदुसमइयट्ठाणप्पहुडि उवरि विसमयपाओग्गट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागं गंतूण होदि । [1]तिसमयपाओग्गट्ठाणं चरिमसमयम्मि जवमज्झं किण्ण जायदे ? ण, असंखेज्जलोगमेत्त-गुणहाणिप्पसंगादो । एदं कुदो णव्वदे ? हेट्ठिमट्ठाणेहिंतो असंखेज्जगुणतिसमयपाओग्गट्ठाणेसु असंखेज्जलोगेहि गुणिदेसु विसमयपाओग्गट्ठाणाणं पमाणुप्पत्तीदो । तं पि कुदो णव्वदे ? पुव्वं परूविदअप्पाबहुगसुत्तादो । तं जहा-सव्वत्थोवा अट्ठसमयपाओग्गअणुभागबंधज्झव-साणट्ठाणाणि । दोसु वि पासेसु सत्तसमयपाओग्गअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । दोसु वि पासेसु छसमयपाओग्गट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । दोसु वि पासेसु पंचसमइयपाओग्गट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । दोसु वि पासेसु [2]चदुसमइयपाओ-ग्गट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । [2]तिसमइयपाओग्गट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । [3]विसमयपाओग्गट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । गुणगारो सव्वत्थ असंखेज्ज-

....

अब यवमध्यमें उत्पन्न प्रदेशकी प्ररूपणा करनेके लिये यवमध्यकी प्ररूपणा करते हैं -

यवमध्यकी प्ररूपणा करनेपर स्थानोंके असंख्यातवें भागमें यवमध्य होता है ।।२९०।।

सब स्थानोंके असंख्यात खण्ड करके उनमेंसे एक खण्डमें यवमध्य होता है । यह यवमध्य के अधस्तन चार समय योग्य स्थानोंसे लेकर ऊपर दो समय योग्य स्थानोंके असंख्यातवें भाग जाकर होता है।

शंका - तीन समय योग्य स्थानोंके अन्तिम समयमें यवमध्य क्यों नहीं होता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, वैसा होनेपर असंख्यात लोकप्रमाण गुणहानियोंका प्रसंग आता है ।

शंका - वह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान - अधस्तन स्थानोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे तीन समय योग्य स्थानोंको असंख्यात लोकोंसे गुणित करनेपर चूँकि दो समय योग्य स्थानोंका प्रमाण उत्पन्न होता है, अतः, इसीसे उक्त प्रसंग सुविदित है ।

शंका - वह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान - वह पूर्वमें प्ररूपित अल्पबहुत्व सम्बन्धी सूत्रसे जाना जाता है । यथा - आठ समय योग्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । उनसे दोनों ही पार्श्वभागोंमें सात समय योग्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । उनसे दोनों ही पार्श्वभागोंमें छह समय योग्य स्थान असंख्यातगुणे हैं । उनसे दोनों ही पार्श्वभागोंमें पाँच समय योग्य स्थान असंख्यातगुणें हैं । उनसे दोनों ही पार्श्वभागोंमें चार समय योग्य स्थान असंख्यातगुणे हैं । उनसे तीन समय योग्य स्थान असंख्यातगुणे हैं । उनसे दो समय योग्य स्थान असंख्यातगुणे हैं ।

....

(१) ताप्रतौ 'त्ति (वि) समय-' इति पाठः । (२) अ-ताप्रतौः 'समइय' इति पाठः ।

(३) प्रतिषु 'समइय' इति पाठः ।

लोगमेत्तो होदि त्ति सुत्तम्मि ण परूविदो । एदं सुत्तं वक्खाणेंता के वि आइरिया गुणगारो कायट्ठिदि त्ति भणंति, के वि सामण्णेण असखेज्जा लोगा त्ति । तं जाणिय वत्तव्वं । जवमज्झस्स हेट्ठिमट्ठाणाणि किं बहुगाणि आहो उवरिमाणि, उभयथा वि ट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे जवमज्झमिदि सिद्धीदो त्ति भणिदे तण्णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

जवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि थोवाणि ।। २९१ ।।

सुगमं ।

उवरिमसंखेज्जगुणाणि ।। २९२ ।।

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं [1]परूविदमिदि णेह परूविज्जदे ।

फोसणपरूवणदाए तीदे काले एयजीवस्स उक्कस्सए अणुभागबंध-ज्झवसाणट्ठाणे फोसणकालो थोवो ।। २९३ ।।

एत्थ संत-पमाणपरूवणाहि विणा अप्पाबहुगपरूवणा चेव किमट्ठं वुच्चदे ? ण ताव संतपरूवणा एत्थ कायव्वा, अप्पाबहुगेण चेवावगमादो । कुदो ? अविज्जमाणसंतस्स

....

गुणकार सब स्थानोंमें असंख्यात लोग प्रमाण है, यह सूत्रमें नहीं कहा गया है । इस सूत्रका व्याख्यान करनेवाले कितने ही आचार्य गुणकार कार्यस्थिति प्रमाण बतलाते हैं और कितने ही सामान्य रूपसे उसका प्रमाण असंख्यात लोक बतलाते हैं । उसका जान करके कथन करना चाहिये ।

यवमध्यसे नीचेके स्थान क्या बहुत हैं अथवा ऊपरके, क्योंकि, दोनों प्रकारके ही स्थानोंके असंख्यातवें भागमें यवमध्य है, ऐसा सिद्ध है, इस प्रकार पूछे जानेपर उसका निर्णय करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं-

यवमध्यके नीचेके स्थान स्तोक हैं ।। २९१ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे ऊपरके स्थान असंख्यातगुणे हैं ।। २९२ ।।

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । कारण की प्ररूपणा पहले की जा चुकी है, अतएव उसकी यहाँ प्ररूपणा नहीं की जाती है ।

स्पर्शनप्ररूपणाकी अपेक्षा अतीत कालमें एक जीवके उत्कृष्ट अनुभागबन्धाध्यव-सानस्थानमें स्पर्शनका काल स्तोक है ।। २९३ ।।

शंका - यहाँ सत्प्ररूपणा व प्रमाणप्ररूपणाके बिना अल्पबहुत्वप्ररूपणा ही किसलिये की जा रही है ?

समाधान - यहाँ सत्प्ररूपणा करना योग्य नहीं है, क्योंकि, उसका ज्ञान अल्पबहुत्वसे ही

....

(१) अ-आप्रत्योः 'पुव्वं व परूविद-', ताप्रतौ 'पुव्वं (वि)' परूविद-' इति पाठः ।

थोवबहुत्तपरूवणाणुववत्तीदो । ण पमाणपरूवणा वि वत्तव्वा, एगेगजीवेण अदीदे काले एगेगट्ठाणफोसिदकालस्स उवदेसेण विणा वि अणंतपमाणत्तसिद्धीदो । उक्कस्सअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणफोसणकालो त्ति तीदे काले एगजीवेण बिसमयपाओग्गसव्वाणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणेसु अच्छिदकालो घेत्तव्वो । कधं बिसमयपाओग्गसव्वट्ठाणाणं उक्कस्सट्ठाणववएसो? उच्चदे - उक्कस्सट्ठाणसहचारेण दोण्णं समयाणं उक्कस्सववएसो असिसहचरियस्स असिव्ववएसो व्व । उक्कस्सस्स अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणमुक्कस्साणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणं । तत्थ फोसणकालो थोवो कुदो ? एगजीवस्स अइसंकिलेसे पाएण पदणाभावादो (२) । ण च एसो तत्थ णिरंतरमच्छिदकालो, किं तु अंतरिय अंतरिय तत्थ अच्छिदकाले संकलिदे थोवो त्ति भणिदं ।

जहण्णए अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे फोसणकालो असंखेज्जगुणो ।। २९४ ।। (४)

जहण्णाणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे त्ति भणिदे हेट्ठिमचदु [१]समयपाओग्गसव्वट्ठाणाणं गहणं । [२]कधं तेसिं सव्वेसिं जहण्णववएसो ? उच्चदे-चदुण्णं समयाणं जहण्णट्ठाणसह-

....

हो जाता है । कारण कि जिसका अस्तित्व न हो उसके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा नहीं बनती है । प्रमाणप्ररूपणा भी कहनेके अयोग्य है, क्योंकि, एक एक जीवके द्वारा अतीत कालमें एक एक स्थानके स्पर्शन किये जानेका काल अनन्त है, इस प्रकार उपदेशके बिना भी उसका अनंत प्रमाण सिद्ध है । उत्कृष्ट अनुभागबंधाध्यवसानस्थानस्पर्शन कालसे अतीत कालमें एक जीवके द्वारा दो समय योग्य सब अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानोंमें रहनेका काल ग्रहण करना चाहिये ।

शंका – दो समय योग्य सब स्थानोंकी उत्कृष्ट स्थान संज्ञा कैसे घटित होती है ?

समाधान – इस शंकाका उत्तर कहते हैं । उत्कृष्ट स्थानके साथ रहनेके कारण दो समयोंकी उत्कृष्ट संज्ञा है, जैसे असि युक्त पुरुषकी असि यह संज्ञा होती है ।

उत्कृष्टका अनुभागबंधाध्यवसानस्थान उत्कृष्ट अनुभागबंधाध्यवसानस्थान, इस प्रकार यहाँ षष्ठी तत्पुरुषसमास है । उसमें स्पर्शनका काल स्तोक है । इसका कारण यह है कि एक जीवका प्रायः अतिशय संक्लेशमें पतन नहीं होता है (२) । और यह वहाँ निरन्तर रहनेका काल नहीं हैं, किन्तु बीच बीचमें अन्तर करके वहाँ रहनेके कालका संकलन करनेपर उसे स्तोक ऐसा कहा गया है ।

उससे जघन्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानमें स्पर्शन काल असंख्यातगुणा है ।।२९४।। (४)

जघन्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थान ऐसा कहनेपर नीचेके चार समय योग्य सब स्थानोंका ग्रहण किया गया है ।

शंका – उन सबकी जघन्य संज्ञा कैसी है ?

समाधान – जघन्य स्थानके साथ रहनेके कारण चार समयोंकी जघन्य संत्ता कही जाती

....

(१) अप्रतौ 'समइय' इति पाठः । (२) अ-ताप्रत्योः 'कदं' ताप्रतौ कदं (धं) इति पाठः ।

चारेण जहण्णसण्णा । तस्स ट्ठाणाणि जहण्णाणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणि । तत्थ फोसणकालो असंखेज्जगुणो । कुदो? असंखेज्जवारं चदुसमयपाओग्गट्ठाणेसु परिभमिय सइं विसमयपाओग्गट्ठाणाणं गमणादो ।

कंडयस्स फोसणकालो तत्तियो चेव ।। २९५ ।।

पुव्वं परूविदस्सेव किमट्ठं परूवणा कीरदे, परूविदपरूवणाए फलाभावादो ? ण एस दोसो, जहण्णाणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे त्ति वयणादो उप्पण्णसंसयस्स सीसस्स संदेहणिवारणट्ठं तदुप्पत्तीदो ।

जवमज्झफोसणकालो असंखेज्जगुणो ।। २९६ ।। (८)

जवमज्झे त्ति भणिदे अट्ठसमयपाओग्गसव्वट्ठाणाणं गहणं । तेसिमदीदकाले एगजीवेण फोसिदकालो असंखेज्जगुणो । कुदो ? मज्झिमपरिणामेहि जवमज्झट्ठाणेसु असंखेज्जवारं परिभमिय सइं चदुसमयपाओग्गट्ठाणाणं गमणसंभवादो ।

कंडयस्स उवरि फोसणकालो असंखेज्जगुणो ।। २९७ ।।(३।२)

कुदो ? अट्ठसमयपाओग्गट्ठाणेहिंतो तिसमय-विसमयपाओग्गट्ठाणाणमसंखेज्ज-गुणत्तादो ।

....

है । उसके स्थान जघन्य अनुभागस्थान कहे जाते हैं । उनमें रहनेका काल असंख्यातगुणा है, क्योंकि, असंख्यातबार चार समय योग्य स्थानोंमें परिभ्रमण करके एक बार दो समय योग्य स्थानोंको प्राप्त होता है ।

काण्डकका स्पर्शनकाल उतना ही है ।। २९५ ।।

शंका – पहले जिसकी प्ररूपणा की जा चुकी है उसीकी फिरसे प्ररूपणा किसलिये की जा रही है, क्योंकि, प्ररूपितकी प्ररूपणा करनेमें कोई लाभ नहीं है ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जघन्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थान इस कथन से उत्पन्न हुए संदेहसे युक्त शिष्यके उस संदेहको दूर करनेके लिये प्ररूपितकी भी प्ररूपणा बन जाती है ।

उससे यवमध्यका स्पर्शनकाल असंख्यातगुणा है ।। २९६ ।। (८)

यवमध्य ऐसा कहनेपर आठ समय योग्य सब स्थानोंको ग्रहण करना चाहिये । अतीत कालमें एक जीवके द्वारा उनका स्पर्शनकाल असंख्यातगुणा है । कारण यह है कि मध्यम परिणामोंके द्वारा यवमध्यस्थानोंमें असंख्यात बार परिभ्रमण करके एक बार चार समय योग्य स्थानोंमें जाना सम्भव है ।

उससे काण्डकके ऊपर स्पर्शनकाल असंख्यातगुणा है ।। २९७ ।। (३ । २)

इसका कारण यह है कि आठ समय योग्य स्थानोंकी अपेक्षा तीन समय व दो समय योग्य स्थान असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

जवमज्झस्स उवरिं कंडयस्स हेट्ठदो फोसणकालो असंखेज्जगुणो ॥ २९८॥ (७। ६। ५)

किं कारणं ? जदि वि सत्त-छ-पंचसमयपाओग्गट्ठाणाणि तिसमय-बिमयपाओग्गट्ठा-णाणं असंखेज्जदिभागो तो वि एदेसिं फोसणकालो असंखेज्जगुणो, मज्झिमपरिणामेहि असंखेज्जवारं परिणमिय सइं तिसमय-बिसमयपाओग्गट्ठाणगमणुवलंभादो[1] ।

कंडयस्स उवरि जवमज्झस्स हेट्ठदो फोसणकालो तत्तियो चेव ॥ २९९ ॥ (७ । ६ । ५)

कुदो ? समाणसंखत्तादो[2] मज्झिमपरिणामेहि बज्झमाणत्तणेण भेदाभावादो च ।

जवमज्झस्स उवरि फोसणकालो विसेसाहिओ ॥ ३०० ॥

(७ । ६ । ५ । ४ । ३ । २)

सत्त-छ-पंचसमयपाओग्गट्ठाणफोसणकालस्सुवरि चदु-त्ति-दोण्णि-समयपाओग्ग-ट्ठाणाणं फोसणकालप्पवेसादो । केत्तियमेत्तो विसेसो ? सत्त-छ-पंचसमयपाओग्गट्ठाणाणं फोसणकालस्स असंखेज्जदिभागो ।

....

उससे यवमध्यके ऊपर और काण्डकके नीचे स्पर्शन काल असंख्यातगुणा है । २९८। (७ । ६ । ५)

शंका - इसका कारण क्या है ?

समाधान - यद्यपि सात, छह और पांच समय योग्य स्थान तीन समय व दो समय योग्य स्थानोंके असंख्यातवें भाग हैं तो भी इनका स्पर्शनकाल असंख्यातगुणा है, क्योंकि, मध्यम परिणामोंके द्वारा असंख्यात बार सात, छह और पाँच समय योग्य स्थानोंमें परिभ्रमण करके एक बार तीन समय व दो समय योग्य स्थानोंमें गमन पाया जाता है ।

काण्डकके ऊपर और यवमध्यके नीचे स्पर्शनकाल उतना ही है ॥ २९९ ॥ (७ । ६ । ५)

इसका कारण यह है कि एक तो उनकी संख्या समान है, दूसरे मध्यम परिणामोंके द्वारा बध्यमान स्वरूपसे उनमें कोई भेद भी नहीं है ।

उनसे यवमध्यके ऊपर स्पर्शनकाल विशेष अधिक है ॥ ३०० ॥

(७ । ६ । ५ । ४ । ३ । २)

कारण कि सात, छह व पाँच समय योग्य स्थानोंके स्पर्शनकालके ऊपर चार, तीन व दो समय योग्य स्थानोंके स्पर्शनकालका यहाँ प्रवेश है । विशेषका प्रमाण कितना है ? वह सात, छह व पांच समय योग्य स्थानों सम्बन्धी स्पर्शनकालके असंख्यातवें भाग मात्र है ।

....

(१) ताप्रतौ- 'ट्ठाणाणमणुवलंभादो' इति पाठः । (२) मप्रतौ 'समयाणसंखत्तादो' इति पाठः ।

कंडयस्स हेट्ठदो फोसणकालो विसेसाहिओ ।। ३०१ ।।

(४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ७ । ६ । ५)

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सगकालस्स असंखेज्जा भागा[1] विसेसो । तं जहा-जवमज्झ-कालब्भंतरे चदुसमयपाओग्गट्ठाणकालमेत्तं घेत्तूण उवरिमसत्त-छ-पंचसमयपाओग्गट्ठाण-कालाणं उवरि ट्ठविदे एत्तियं होदि (४ । ५ । ६ । ७ । ७ । ६ । ५ । ४) । एसो कालो तिसमय-विसमयपाओग्गट्ठाणाणं कालं मोत्तूण सेसकाले पेक्खिय दुगुणो होदि । पुणो जवमज्झकालस्स अवणिदसेसा असंखेज्जा भागा अत्थि । पुणो ते घेत्तूण हेट्ठिमतिसमय-विसमयपाओग्गट्ठाणकालम्मि सोहिदे सुद्धसेसं विसमय-तिसमयपाओग्गट्ठाणकालस्स असंखेज्जा भागा होदि । पुणो एदम्मि पुव्वुत्तदुगुणकालम्मि सोहिदे किंचूणदुगुणकालो चिट्ठदि। तेण विसेसाहियो त्ति कालो परूविदो ।

कंडयस्स उवरिं फोसणकालो विसेसाहिओ ।। ३०२ ।।

(५ । ६ । ७ । ८ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । २)

केत्तियमेत्तो विसेसो ? उवरिमतिसमय-विसमयपाओग्गट्ठाणकालमेत्तो ।

सव्वेसु ट्ठाणेसु फोसणकालो विसेसाहिओ ।। ३०३ ।।

(४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । २)

....

इससे काण्डकके नीचे स्पर्शनकाल विशेष अधिक है ।।३०१ ।।

४,५,६,७,८,७,६,५

विशेष कितना है ? वह विशेष अपने कालके असंख्यात बहुभाग प्रमाण है । यथा- यवमध्यकालके भीतर चार समय योग्य स्थानोंके कालमात्रको ग्रहण कर उपरिम सातछह व पांच समय योग्य स्थानों सम्बन्धी कालोंके ऊपर स्थापित करनेपर इतना होता है-४,५,६,७,७,६,५,४, । यह काल तीन समय व दो समय योग्य स्थानों सम्बन्धी कालोंको छोडकर शेष कालोंकी अपेक्षा करके दुगुणा है । पुनः यवमध्यकालका कम करनेसे शेष रहा असंख्यात बहुभाग है । उसको ग्रहण कर अधस्तन तीन समय और दो समय योग्य स्थानोंके कालमेंसे कम कर देनेपर शेष दो समय व तीन समय योग्य स्थानोंके कालका असंख्यात बहुभाग रहता है । इसको पूर्वोक्त दुगुने कालमेंसे कम कर देनेपर कुछ कम दुगुणा काल रहता है । इसीलिये विशेष अधिक काल की प्ररूपणा की गई है ।

उससे काण्डकके ऊपर स्पर्शनकाल विशेष अधिक है ।। ३०२ ।।

५,६,७,८,७,६,५,४,३,२

विशेष कितना है ? वह ऊपरके तीन समय और दो समय योग्य स्थानों सम्बन्धी कालके बराबर है।

उससे सब स्थानोंमें स्पर्शनकाल विशेष अधिक है ।। ३०३ ।।

४,५,६,७,८,७,६,५,४,३,२

....

(१) आप्रतौ 'असंखेज्जभाग', ताप्रतौ 'असंखेज्जभागो' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमचदुसमयपाओग्गट्ठाणकालमेत्तो । एवं अभवसिद्धियपाओग्गे । एवं फोसणपरूवणा समत्ता ।

अधवा, उक्कस्सज्झवसाणट्ठाणे त्ति भणिदे बिसमयपाओग्गट्ठाणाणं चरिमं घेप्पदि । जहण्णज्झवसाणट्ठाणे त्ति भणिदे चदुसमयपाओग्गाणं जहण्णं घेप्पदि त्ति के वि आइरिया भणंति । तण्ण घडदे, उक्कस्ससंकिलेसम्मि णिवदणवारेहिंतो उक्कस्सविसोहीए पदणवाराणमसंखेज्जगुणत्तविरोहादो । कंडयस्स फोसणकालो तत्तियो चेवे त्ति वुत्ते उवरि चदुसमयपाओग्गट्ठाणाणं चरिमट्ठाणकालो गहिदो त्ति भणंति । एदं पि ण घडदे, एक्कस्स ट्ठाणस्स कंडयत्तविरोहादो उक्कस्सविसोहीए परिणमणवारेहिंतो मज्झिमसंकिलेसपरिणमणवाराणं समाणत्तविरोहादो । तम्हा बिदियअप्पाबहुगपरूवणा एत्थ ण परूविदा ।

अप्पबहुए त्ति उक्कस्सए अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे जीवा थोवा ।। ३०४ ।।

कुदो ? विसमयपाओग्गट्ठाणकालस्स थोवत्तुवलंभादो ।

जहण्णए अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा ।।३०५।।

कुदो णव्वदे ? पुव्विल्लकालादो एदस्स कालो असंखेज्जगुणो त्ति सुत्तवयणादो

....

विशेष कितना है ? वह अधस्तन चार समय योग्य स्थानों सम्बन्धी कालके बराबर है । इस प्रकार अभवसिद्धिक योग्य स्थानमें प्ररूपणा करनी चाहिये । इस प्रकार स्पर्शनप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अथवा, उत्कृष्ट अध्यवसानस्थान ऐसा कहनेपर दो समय योग्य स्थानोंका अन्तिम स्थान ग्रहण किया जाता है । जघन्य अनुभागस्थान ऐसा कहनेपर चार समय योग्य स्थानोंका जघन्य स्थान ग्रहण किया जाता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु वह घटित नहीं होता क्योंकि, ऐसा होनेपर उत्कृष्ट संक्लेशमें पडनेके वारोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट विशुद्धिमें पडनेके वारोंके असंख्यात गुणे होनेका विरोध होता है ।

काण्डकका स्पर्शनकाल उतना ही है, ऐसा कहनेपर ऊपर चार समय योग्य स्थानों में अन्तिम स्थानके कालको ग्रहण किया गया है, ऐसा वे कहते हैं । परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, एक स्थानके काण्डक होनेका विरोध है, तथा उत्कृष्ट विशुद्धिमें परिणत होनेके वारोंकी अपेक्षा मध्यम संक्लेशमें परिणत होनेके वारोंकी समानता का विरोध है । इस कारण द्वितीय अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा यहाँ नहीं की गई है ।

अल्पबहुत्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट अनुभागबन्धाध्यवसानमें जीव स्तोक हैं ।। ३०४ ।।

कारण यह कि दो समय योग्य स्थानोंका काल स्तोक पाया जाता है ।

उनसे जघन्य अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ३०५ ।।

शंका – यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान – पूर्वके कालकी अपेक्षा इसका काल असंख्यातगुणा है, इस सूत्रवचनसे जाना

णव्वदे जहा चदुसमयपाओग्गट्ठाणेसु परिभमंति जीवा बहुगा त्ति ।

कंडयस्स जिवा तत्तिया चेव ।। ३०६ ।।

कुदो ? दोण्णं कालादो भेंदाभावादो।

जवमज्झस्स जीवा असंखेज्जगुणा ।। ३०७ ।।

कुदो ? कंडयस्स जवमज्झकालस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

कंडयस्स उवरिं जीवा असंखेज्जगुणा ।। ३०८ ।।

कुदो ? जवमज्झट्ठाणेहिंतो तिसमइयविसमइयपाओग्गट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

जवमज्झस्स उवरि कंडयस्स हेट्ठिमदो जीवा असंखेज्जगुणा ।।३०९।।

कुदो ? असंखेज्जगुणफोसणकालत्तादो ।

कंडयस्स उवरिं जवमज्झस्स हेट्ठिमदो जीवा तत्तिया चेव ।।३१०।।

कुदो ? फ़ोसणकालट्ठाणसंखाहि समाणत्तादो[१] ।

जवमज्झस्स उवरिं जीवा विसेसाहिया ।। ३११ ।।

सुगमं ।

....

जाता है कि चार समय योग्य स्थानोंमें जीव बहुत भ्रमण करनेवाले हैं ।

काण्डकके जीव उतने ही हैं ।। ३०६ ।।

कारण कि दोनोंमें कालकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

उनसे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ३०७ ।।

कारण कि काण्डककालकी अपेक्षा यवमध्यकाल असंख्यातगुणा पाया जाता है ।

उनसे काण्डकके ऊपर जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ३०८ ।।

कारण कि, यवमध्यके स्थानोंकी अपेक्षा तीन समय व दो समय योग्य स्थान असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

उनसे यवमध्यके ऊपर और काण्डकके नीचे जीव असंख्यातगुणे हैं ।। ३०९ ।।

कारण कि-यहाँ असंख्यातगुणा स्पर्शनकाल पाया जाता हैं ।

काण्डकके ऊपर और यवमध्यके नीचे जीव उतने ही हैं ।। ३१० ।।

कारण कि यहाँ स्पर्शनकाल और स्थानसंख्याकी अपेक्षा समानता है ।

उनसे यवमध्यके ऊपर जीव विशेष अधिक हैं ।। ३११ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

....

(१) मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-ताप्रतिषु 'पमाणत्तादो' इति पाठः ।

कंडयस्स हेट्ठिमदो जीवा विसेसाहिया ।। ३१२ ।।

एदं पि सुगमं ।

कंडयस्स उवरिं[1] जीवा विसेसाहिया ।। ३१३।।

सुगमं ।

सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया ।। ३१४ ।।

सुगमं ।

एवमप्पाबहुगे समत्ते जीवसमुदाहारे त्ति तदिया चूलिया समत्ता ।

एवं वेयणाभावविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

....

उनसे काण्डकके नीचे जीव विशेष अधिक हैं ।। ३१२ ।।

यह सूत्र भी सुगम है ।

उनसे काण्डकके ऊपर जीव विशेष अधिक हैं ।। ३१३ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं ।। ३१४ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त हो जानेपर जीवसमुदाहार नामकी तृतीय चूलिका समाप्त होती है ।

इस प्रकार वेदनाभावविधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

....

(१) आप्रतौ 'उवरिम' इति पाठः ।